डॉ॰ श्रीकृष्ण जयन्ती समारोह में महामहिम राज्यपाल, श्री रामनाथ कोविन्द का संबोधन

(दिनांक–21.10.2016, समय– 4:30 बजे पूर्वाह्न)

'डॉ॰ श्रीकृष्ण सिंह जयंती समारोह' में प्रमुख रूप से उपस्थित पूर्व केन्द्रीय मंत्री एवं श्रीकृष्ण ज्ञान मंदिर के अध्यक्ष श्री ललितेश्वर प्रसाद शाही जी, राज्य के पूर्व मंत्री, श्री विश्वमोहन शर्मा जी, बी॰आर॰ अम्बेडकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर के कुलपति डॉ॰ पंडित प्रभाकर पलांडे जी, श्रीकृष्ण विज्ञान केन्द्र के परियोजना –समन्वयक श्री पी॰ मुखोपाध्याय जी, श्रीकृष्ण ज्ञान मंदिर के महासचिव श्री प्रकाश कुमार जी, समारोह में उपस्थित मीडिया प्रतिनिधिगण, देवियों एवं सज्जनों!

आज हम सभी 'बिहार केसरी' डॉ॰ श्रीकृष्ण सिंह जी के 129वें जयंती–समारोह में सम्मिलित होकर एक ऐसे महान दूरदर्शी राजनेता, चिन्तक और समाजसेवी का सादर स्मरण कर रहे हैं, जिनका व्यक्तित्व और कृतित्व आज भी अत्यन्त प्रासंगिक और असीम प्रेरणा का केन्द्र बना हुआ है।

महापुरूषों की जयंतियों के आयोजन के जरिये हम उनकी महानता का श्रद्धापूर्वक स्मरण करने के साथ–साथ, हम यह भी मूल्यांकित करने का प्रयास करते हैं कि उनके सपनों को साकार करने की दिशा में हम कितने कदम आगे बढ़े हैं। महापुरूषों की जयंतियाँ और पुण्य–तिथियाँ हमें बराबर देश और समाज के प्रति संकल्पित होने की प्रेरणा प्रदान करती हैं।

आज जब हम आधुनिक बिहार के निर्माता और इस राज्य के प्रथम मुख्यमंत्री डॉ॰ श्रीकृष्ण सिंह की जयंती आयोजित कर रहे हैं,

तो हमें उनके जीवन–आदर्शों और सिद्धान्तों पर गंभीरतापूर्वक चिन्तन–मनन करना चाहिए। आज के दिन सन् 1887 में नवादा जिले के खनवा गाँव के एक मध्यवर्गीय किसान परिवार में जन्मे श्रीकृष्ण बाबू का बचपन भी अत्यन्त कष्टों में बीता। जब वे पाँच वर्षों के थे, माता के आँचल की छाया उनसे छिन गई। इस घटना का बड़ा गहरा असर उनके व्यक्तित्व पर आजीवन परिलक्षित होता रहा। उनकी प्रारंभिक शिक्षा पिता की देख–रेख में ही घर पर हुई। कुशाग्र बुद्धि और अत्यन्त प्रतिभा के धनी श्रीकृष्ण बाबू का छात्र– जीवन उत्कृष्ट कोटि का रहा। देशभक्ति का जज्बा उनके भीतर छात्र–जीवन में ही पैदा हो गया था। वे राजनीति के प्रति सजग रहने के साथ–साथ, अपनी पढ़ाई–लिखाई के प्रति भी बेहद संवेदनशील और तत्पर रहने वाले छात्र थे। मुंगेर के छात्र–जीवन में ही स्वाध्याय उनके जीवन का प्रमुख आयाम बन गया था। उन्हें पुस्तकों से बहुत प्रेम था। उनके हाथ में जो भी पुस्तक आती, वे उसे रूचिपूर्वक पढ़ डालते और नित् नई पुस्तकों की तलाश में रहते थे। वे अपनी पीढ़ी के वैसे सभी नेताओ से प्रभावित थे, जो राजनीति के साथ–साथ, अध्ययन को भी देश और समाज को समझने के लिए बेहद जरूरी मानते थे। डॉ॰ श्रीकृष्ण बाबू लिखने, पढ़ने और बोलने में पूरे दक्ष और राष्ट्र को नई दिशा और दृष्टि प्रदान करनेवाले एक दूरदर्शी और अत्यन्त लोकप्रिय राजनेता थे। उनके द्वारा संग्रह की गई हजारों दुर्लभ पुस्तकें, मुंगेर स्थित श्रीकृष्ण पुस्तकालय में उपलब्ध हैं। उस पुस्तकालय का कुछ समय के लिए अवलोकन करने का सौभाग्य मुझे मिला था। सचमुच, यह पुस्तकालय बिहार में ज्ञान की धरोहर है।

डॉ॰ श्रीकृष्ण बाबू की उच्च शिक्षा पटना कॉलेज से हुई। उन्होंने इतिहास विषय में एम॰ए॰ किया और पटना नेशनल कॉलेज में प्राध्यापकी भी की। वे कहा करते थे कि वे अगर राजनीति में न

आये होते, तो एक कुशल शिक्षक के रूप में ही ज्यादा संतुष्ट रहकर लोकप्रिय बने रहते। अपने बड़े भाई के सुझाव पर बाद में उन्होंने पटना लॉ कॉलेज से विधि शास्त्र में भी डिग्री प्राप्त करते हुए एक ख्यातिप्राप्त अधिवक्ता के रूप में राज्य में अपनी पहचान बनाई। तबतक भारतीय राजनीति में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी का उदय हो चुका था।

श्रीकृष्ण बाबू ने महात्मा गांधी में भारतीय जनमानस को नेतृत्व प्रदान करने की अद्‌भुत प्रतिभा को देखा था। फिर 'निलहा आंदोलन' की शुरूआत हुई, जहाँ इनके कदम वकालत से राजनीति की ओर बढ़ चले। गाँधीजी के 'असहयोग आंदोलन' में इनकी भूमिका एक वीर–सेनानी की रही। लोगों के बीच नेतृत्व की क्षमता, अदम्य साहस और जुझारू व्यक्तित्व के कारण, अंग्रेजों से लोहा लेते हुए उन्हें कई बार जेल जाना पड़ा। कई बार उन्हें घोर यातना उठानी पड़ी, पर वे अडिग रहे और देश–सेवा तथा जन–सेवा को अपने जीवन का परम उद्देश्य मानते रहे।

जब देश को राजनैतिक आजादी प्राप्त हो गई, तब देश के सामने पुनर्निर्माण तथा विकास की समस्या खड़ी थी। श्रीकृष्ण बाबू ने अपनी कल्पना के भारत को स्वरूप प्रदान करने के लिए बिहार में नवनिर्माण का गुरूतर भार सँभाला और कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। इसका प्रमाण एक घटना से मिलता है। 1947 में बिहार में श्री कृष्ण सिंह की 'हीरक जयंती' मनाई गई थी। इस जयन्ती के उपलक्ष्य में बिहार की जनता की ओर से 'श्रीकृष्ण अभिनंदन ग्रंथ' समर्पित किया गया था, जिसका संपादन राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर ने किया था। यहाँ उनके घनिष्ठ सहयोगी डॉ0 अनुग्रह नारायण सिंह ने एक जगह लिखा है कि ''1921 के बाद बिहार का इतिहास श्रीबाबू के जीवन का इतिहास है। यह इस युगपुरूष के

जीवन के लिए अक्षरशः सत्य है। इन्हें देश की क्षमता पर अटूट भरोसा था। वे शब्दों के जादूगर थे। लोगों को एकजुट करने और उनमें देशहित में उत्साह भरने में उनके शब्द बड़े समर्थवान थे।''

स्वतंत्र भारत में संविधान लागू होने के बाद, पूरे देश में प्रथम आम चुनाव हुआ। लेकिन, उस आम चुनाव और संविधान आने से पहले ही श्रीकृष्ण बाबू बिहार के प्रीमियर थे। बिहार में विधान सभा और लोकसभा के चुनाव श्री कृष्ण सिंह के नेतृत्व में लड़े गए। देश अकाल, बाढ़ तथा बंटवारे के बाद कठिन दौर से गुजर रहा था। ऐसी भीषण परिस्थितियों में भी श्रीकृष्ण बाबू के नेतृत्व में बिहार को भारी सफलता मिली। वे बिहार के प्रथम मुख्यमंत्री हुए। श्रीकृष्ण बाबू देश तथा प्रांत को जिस सबल, आत्मनिर्भर तथा आधुनिक स्वरूप देने का स्वप्न आजादी की लड़ाई के समय से ही देख रहे थे, उसको साकार करने के लिए उन्होंने बिहार के नवनिर्माण की नींव रखी। वे एक कुशल प्रशासक, कथनी और करनी में एकरूपता वाले राष्ट्रीय नेता, अनुपम विद्यानुरागी और सरल हृदय के व्यक्ति थे। उनके अतुलित साहस, शौर्य, दृढ़ता और अदम्य इच्छा–शक्ति के कारण ही उन्हें 'बिहार केसरी' नाम से विभूषित किया गया।

आधुनिक बिहार के निर्माण में स्व॰ श्रीकृष्ण बाबू और स्व॰ अनुग्रह बाबू की अविस्मरणीय भूमिका रही है। दोनों नेताओं ने अद्‌भुत कार्य क्षमता और दूरदर्शितापूर्वक विभिन्न योजनाओं की रूपरेखा तैयार की और उसे सफलतापूर्वक धरातल पर उतारा।

श्रीकृष्ण बाबू एक ऐसे महान राजनेता थे, जिनका व्यक्तित्व उनके अपने ही आदर्शों का सत्त अनुगामी बना रहा। मतलब यह कि उनके जीवन और सिद्धांत में कोई विरोधाभास नही था। वे अपने द्वारा निर्धारित आदर्शों और सिद्धांतो का अपने स्वयं के जीवन में

पहले परिपालन करते थे और तब फिर, दूसरों से भी इसके अनुसरण की उनकी अपेक्षा रहती थी। महात्मा गाँधी से सत्य, अहिंसा, न्याय, समता और सदाचार की प्रेरणा उन्हें मिली थी और इन सबको उन्होंने अपने जीवन में पूरी तत्परता और निष्ठा से ग्रहण किया था। समाज के अभिवंचित वर्ग के प्रति भी उनके हृदय में पूर्ण सम्मान और संवेदना व्याप्त थी। उन्होंने समाज में शांति, सद्भावना और समरसता के लिए अपने मुख्यमंत्रित्व काल में हर संभव प्रयत्न किये। जातीय और सांप्रदायिक सौहार्द बरकरार रखने के लिए उन्होंने भरपूर कोशिशें की।

आज का बिहार, जिसकी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत अत्यन्त समृद्ध है, अगर आधुनिक तकनीकी और औद्योगिक प्रक्षेत्र में विकास की दिशा में अपने कदम बढ़ाने को सोच भी रहा है, तो वह श्रीकृष्ण बाबू जैसे नेता की अग्रगामी सोच का ही नतीजा है।

आज जब हम श्रीकृष्ण बाबू जैसे महान राजनेता की जयंती मना रहे हैं, तब ऐसे अवसर पर मैं राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' की कुछ पंक्तियाँ उल्लेख करना चाहूँगा–

''वसुधा का नेता कौन हुआ?
भू–खंड विजेता कौन हुआ?
अतुलित यश–क्रेता कौन हुआ?
नव धर्म प्रणेता कौन हुआ?
जिसने न कभी आराम किया
बिघ्नों में रहकर नाम किया।''

–दिनकर जी की ये पंक्तियाँ स्व॰ डॉ॰ श्रीकृष्ण सिंह पर अक्षरशः चरितार्थ होती हैं। उन्होंने आजीवन बिना आराम किये अथकित रूप से देश और समाज की सेवा की।

आज मैं श्रीकृष्ण बाबू की जयन्ती के अवसर पर उन्हें अपना श्रद्धापूर्वक प्रणाम निवेदित करता हूँ और यह कामना करता हूँ कि हम सभी उनके सद्विचारों से सदा अनुप्राणित होते रहें तथा एक समुन्नत बिहार, सुन्दर बिहार, सुसंस्कृत बिहार एवं समृद्ध बिहार के नव–निर्माण हेतु अपने दृढ़ संकल्पों के साथ जुटे रहें। ऐसे भव्य आयोजन के लिए आयोजक–संस्थाओं को भी मैं बधाई देता हूँ। आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद!

जय हिन्द!!

****

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।